नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विवि में अकादमिक नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन

शिक्षा में समर्पण से परिवर्तन लाना संभव - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा, दि. 01 मई 2018 : उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को सुधारणा आज के समय की बड़ी चुनौती है। इससे निपटने के लिए सरकार और संस्थाओं को तालमेल बिठाकर काम करना होगा। अकादमिक नेतृत्व करने की दिशा में हर शिक्षक समर्पित होकर कार्य करें तो शिक्षा में परिवर्तन लाया जा सकता है। उक्त आशय के विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय

हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। अकादमिक नेतृत्व एवं शैक्षिक प्रबंधन केंद्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ तथा पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षा मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार प्रायोजित उच्च शिक्षा संस्थाओं के कुलपति, प्रतिकुलपति, अधिष्ठाता तथा प्राचार्यों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में मंगलवार, 1 मई को अकादमिक भवन के सभागार में किया गया। उदघाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते

हुए प्रो. मिश्र बोल रहे थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. जनक पांडे तथा प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर, कार्यक्रम संयोजक डॉ. शिरीष पाल सिंह मंचासीन थे। चार दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा संस्थाओं के अधिकारी एवं प्राचार्य उपस्थित हुए।

प्रो. मिश्र ने अपने वक्तव्य में आज की शिक्षा पद्धति, शिक्षा में नवाचारी दृष्टिकोण, शिक्षकों का दायित्व आदि पर अपने विचार रखे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ शिक्षाविद, मनोविज्ञानी प्रो. जनक पांडे ने कहा कि वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों को विशेषीकृत कर दिया गया है। शिक्षा में विश्वास ही आधार है। शिक्षक का विद्यार्थियों पर

तथा विद्यार्थियों का शिक्षक पर विश्वास हो तो ही शिक्षा में परिवर्तन लाया जा सकता है तथा शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि विश्वविद्यालय का मतलब वैश्विक आयाम से सम्बद्ध है, ऐसे में हमें वैश्विक परिदृश्य में हमारी शिक्षा को देखना चाहिए। उनका कहना था कि विद्यार्थी , शिक्षक और समाज का संबंध मूल्यों पर आधारित हों तथा गुणवत्ता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता न हो तो ही हम अपेक्षित लक्ष्य हासिल कर सकेंगे।

प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा चरित्र निर्माण शिक्षा के केंद्र में होना चाहिए। पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने इसी दृष्टि से काशि विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने कहा कि शिक्षक अपनी नवाचारी प्रतिभाओं से अन्य को प्रेरित कर शिक्षा की चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं। इस अवसर पर प्रो. के. के. सिंह ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने दिया। डॉ. शिरीष पाल सिंह ने चार दिवसीय कार्यक्रम की

रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. भरत पंडा ने किया। सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पि कुमारी ने आभार व्यक्त किया। चार दिवसीय कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों पर विमर्श किया जाएगा। इस अवसर पर कार्यक्रम में शामिल प्रतिनिधियों ने अपनी जिज्ञासाएं प्रकट की तथा चर्चा में सहभागिता की।